

MINIMALIST IAS के नोट्स — यह NCERT की किताब नहीं है

UPSC के लिए भारतीय हस्तशिल्प

NCERT की विरासत शिल्प (Heritage Crafts) की किताबें उसकी सूची में तो हैं, पर उसकी वेबसाइट पर उनकी फ़ाइलें नहीं हैं। यह गाइड बताती है कि UPSC हस्तशिल्प के बारे में क्या पूछता है, और यह आधिकारिक रिकॉर्ड से बनी है: भारत सरकार की GI रजिस्ट्री, UPSC के अपने प्रश्न पत्र और उत्तर कुंजियाँ, और पत्र सूचना कार्यालय (PIB)। जब NCERT अपनी किताबें फिर से उपलब्ध कराए, तो उन्हें इस गाइड के साथ पढ़ें।



1. UPSC हस्तशिल्प के बारे में क्या पूछता है

2016 से 2026 के बीच प्रारंभिक परीक्षा ने हस्तशिल्प के बारे में चार तरह से पूछा:

सामग्री से जुड़े कला-इतिहास के प्रश्न भी आते हैं, जैसे चंद्रकेतुगढ़ की टेराकोटा कला (2021 प्रश्न 37) और कांसे की 'नर्तकी' (2025 प्रश्न 72)।

- कौन-सा शिल्प किस राज्य का है (2018 प्रश्न 54 — शिल्प-राज्य के ये युग्म GI पंजीकरण हैं)।
- GI टैग के पीछे का कानून (2018 प्रश्न 26 — भारत ने GI अधिनियम क्यों बनाया)।
- हथकरघा का इतिहास और नीति (2023 प्रश्न 83 — राष्ट्रीय हथकरघा दिवस और स्वदेशी आंदोलन)।
- GI शिल्प का वैश्विक बाज़ार तक पहुँचना (2026 प्रश्न 29 — एरी रेशम के लिए ओको-टेक्स प्रमाणन)।

UPSC प्रारंभिक 2018 • प्रश्न 26

भारत में माल के भौगोलिक संकेत (रजिस्ट्रेशन और संरक्षण) अधिनियम, 1999 को निम्नलिखित में से किससे संबंधित दायित्वों के अनुपालन के लिए लागू किया गया ?

- (a) आई.एल.ओ.
- (b) आई.एम.एफ.
- (c) यू.एन.सी.टी.ए.डी.
- (d) डब्ल्यू.टी.ओ.

UPSC की कुंजी: (d)। भारत का GI कानून भौगोलिक उपदर्शनों पर WTO के प्रति उसकी प्रतिबद्धताओं को लागू करता है।

UPSC प्रारंभिक 2018 • प्रश्न 54

निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए :

शिल्प — किस राज्य की परंपरा

1. पुथुक्कुलि शॉल — तमिल नाडु
2. सुजनी कढ़ाई — महाराष्ट्र
3. उप्पाडा जामदानी साड़ी — कर्नाटक

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं ?

- (a) केवल 1
- (b) 1 और 2
- (c) केवल 3
- (d) 2 और 3

UPSC की कुंजी: (a)। GI रजिस्ट्री में टोडा कढ़ाई तमिलनाडु के नाम दर्ज है। इसकी GI जर्नल प्रविष्टि (संख्या 29) कढ़ाईदार टोडा लबादे का वर्णन करती है, जिसे 'pootkhull(zh)y' लिखा गया है। प्रश्न की 'पुथुक्कुली' शॉल यही है। 'Sujini Embroidery Work of Bihar' बिहार के नाम और 'Uppada Jamdani Sarees' आंध्र प्रदेश के नाम दर्ज हैं।

UPSC प्रारंभिक 2021 • प्रश्न 37

निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए :

ऐतिहासिक स्थान — ख्याति का कारण

1. बुर्जहोम : शैलकृत देव मंदिर
2. चंद्रकेतुगढ़ : टेराकोटा कला
3. गणेश्वर : ताम्र कलाकृतियाँ

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/कौन-से सही सुमेलित है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) 1 और 2
- (c) केवल 3
- (d) 2 और 3

UPSC की कुंजी: (d) — युग्म 2 और 3 सही हैं।

UPSC प्रारंभिक 2023 · प्रश्न 83

निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

कथन-I :

7 अगस्त को राष्ट्रीय हथकरघा दिवस के रूप में घोषित किया गया है।

कथन-II :

1905 में, इसी दिन स्वदेशी आंदोलन शुरू किया गया था।

उपर्युक्त कथनों के बारे में, निम्नलिखित में से कौन-सा एक सही है?

- (a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II, कथन-I की सही व्याख्या है
- (b) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II, कथन-I की सही व्याख्या नहीं है
- (c) कथन-I सही है किन्तु कथन-II गलत है
- (d) कथन-I गलत है किन्तु कथन-II सही है

UPSC की कुंजी: (a)। PIB: स्वदेशी आंदोलन 7 अगस्त 1905 को शुरू हुआ था, और 2015 में सरकार ने उसकी स्मृति में 7 अगस्त को राष्ट्रीय हथकरघा दिवस घोषित किया।

UPSC प्रारंभिक 2018 · प्रश्न 42

सुप्रसिद्ध चित्र “बणी-ठणी” किस शैली का है ?

- (a) बूँदी शैली
- (b) जयपुर शैली
- (c) काँगड़ा शैली
- (d) किशनगढ़ शैली

UPSC की कुंजी: (d) किशनगढ़ शैली।

UPSC प्रारंभिक 2025 · प्रश्न 72

मोहनजोदड़ो से प्राप्त ‘नाचती हुई लड़की (डांसिंग गर्ल)’ नामक प्रख्यात नारी लघुमूर्ति किस पदार्थ की बनी है?

- (a) इन्द्रगोप मणि (कार्नीलियन)
- (b) मृत्तिका (क्ले)
- (c) कांस्य
- (d) स्वर्ण

UPSC की कुंजी: (c) कांसा।

UPSC प्रारंभिक 2026 · प्रश्न 29

वैश्विक वस्त्र उद्योग में एरी रेशम (सिल्क) के लिए ओको-टेक्स प्रमाणन (Oeko-Tex certification) प्राप्त करने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तात्पर्य निम्नलिखित में से कौन-सा/कौन-से है/हैं ?

1. यह भारतीय निर्यातकों को रसायनमुक्त उत्पादों को अधिक महत्व देने वाले उच्चस्तरीय बाजारों में प्रतिस्पर्धा करने की अनुमति देता है।
2. यह पुष्टि करता है कि एरी रेशम अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा, पर्यावरणीय, और गुणवत्ता मानकों को पूरा करता है, जिससे प्रीमियम पर्यावरण-सचेतन बाजारों में इसे प्रवेश का अधिकार मिलता है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर उत्तर चुनिए :

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1, न ही 2

UPSC की अनंतिम कुंजी: (c)। PIB, अगस्त 2024: ओको-टेक्स एक मानक है जो वस्त्रों में हानिकारक पदार्थों और पर्यावरण-अनुकूल उत्पादन की जाँच करता है, और यह प्रमाणन एरी रेशम के लिए वैश्विक बाजार खोलता है – यह दुनिया का एकमात्र वीगन रेशम और असम का GI है।

2018 प्रश्न 54 से सबक्र: UPSC का उत्तर GI रजिस्ट्री से हूबहू मेल खाता है – टोडा कढ़ाई तमिलनाडु के नाम पंजीकृत है, सुजनी कढ़ाई बिहार के (महाराष्ट्र के नहीं), और उप्पाडा जामदानी साड़ियाँ आंध्र प्रदेश के (कर्नाटक के नहीं)। शिल्प को उसके पंजीकृत राज्य के साथ याद करें।

2. GI टैग संक्षेप में

- भौगोलिक उपदर्शन (GI) बताता है कि कोई वस्तु किसी निश्चित क्षेत्र से आती है, और उसकी विशेष गुणवत्ता, ख्याति या अन्य विशेषता उसी उद्गम से जुड़ी है।
स्रोत: [IP India, 'Geographical Indications: An Introduction'](#)
- GI का क़ानून 'माल का भौगोलिक उपदर्शन (रजिस्ट्रीकरण और संरक्षण) अधिनियम, 1999' है। UPSC की उत्तर कुंजी (2018 प्रश्न 26) इसे WTO के प्रति भारत के दायित्वों से जोड़ती है।
स्रोत: [The Geographical Indications of Goods \(Registration and Protection\) Act, 1999 \(No. 48 of 1999\), Gazette of India, 30 Dec 1999](#); [UPSC Civil Services \(Preliminary\) GS Paper I and final answer keys](#)
- उत्पादकों का संघ, कोई संगठन या क़ानून द्वारा स्थापित प्राधिकरण आवेदन कर सकता है, पर उसे उत्पादकों के हितों का प्रतिनिधित्व करना होगा।
स्रोत: [IP India, 'Geographical Indications: An Introduction'](#)
- पंजीकृत GI के अलग-अलग उत्पादक 'अधिकृत उपयोगकर्ता' के रूप में पंजीकरण करा सकते हैं।
स्रोत: [IP India, 'Geographical Indications: An Introduction'](#)
- पंजीकरण आवेदन की तारीख से 10 वर्ष तक मान्य रहता है और हर बार 10-10 वर्ष के लिए बार-बार नवीनीकृत किया जा सकता है।
स्रोत: [IP India, 'Geographical Indications: An Introduction'](#)
- दार्जिलिंग चाय GI आवेदन संख्या 1 थी और उसे प्रमाणपत्र संख्या 1 मिला। हस्तशिल्प का पहला आवेदन (संख्या 3) केरल के आरनमुला कन्नाडी (धातु दर्पण) का था।
स्रोत: [GI Registry public search — application records](#)
- 31 दिसंबर 2025 तक रजिस्ट्री में 684 पंजीकृत GI हैं, जिनमें 349 हस्तशिल्प पंजीकरण हैं (इन्हीं शिल्पों के 26 लोगो पंजीकरण इनसे अलग हैं)। PIB ने दिसंबर 2025 में 318 GI-टैग वाले हस्तशिल्प उत्पाद बताए। किन चीज़ों को गिना गया, इससे संख्या बदल जाती है, इसलिए संख्या नहीं, शिल्प याद करें।
स्रोत: [GI Registry, 'Details of GI Applications Registered as on December 31, 2025' \(State wise Registered GI of India.pdf\)](#); [PIB backgrounder 'Handicrafts at the Heart of India's Rural Economy', 9 Dec 2025](#)

3. जानने लायक शिल्प, समूह-दर-समूह

यहाँ केवल वे शिल्प हैं जिनका UPSC से कोई संबंध है (63): जिनके बारे में UPSC पूछ चुका है, जिनका नाम NCERT में है, नए GI पंजीकरण, और वस्त्र या चित्रकला के GI, क्योंकि UPSC इन्हीं दो तरह के शिल्प पूछ चुका है। हर शिल्प के साथ लिखा है कि वह यहाँ क्यों है।

हर विवरण GI जर्नल (आवेदन का रजिस्ट्री द्वारा प्रकाशित रिकॉर्ड) में उस शिल्प की प्रविष्टि का Minimalist IAS द्वारा लिखा सार है।

बुनाई: साड़ियाँ, रेशम और शॉल

बनारस ब्रोकेड और साड़ियाँ

Banaras Brocades And Sarees
उत्तर प्रदेश

वाराणसी के रेशमी ब्रोकेड और साड़ियाँ, जिनके डिज़ाइन अतिरिक्त बाने से बुने जाते हैं। इनमें भारी किमखाब जैसे ज़री ब्रोकेड, तनछोई जैसे रेशमी डिज़ाइन वाले अमरु ब्रोकेड, और महीन मलमली रेशम या ऑर्गेज़ा पर बने आबरवाँ शामिल हैं।

यहाँ क्यों: NCERT कक्षा 8 'Exploring Society: India and Beyond (भाग 2)', अध्याय 7, 8; NCERT कक्षा 10 'भारत और समकालीन विश्व-2', अध्याय 4।

GI जर्नल 29, आवेदन 99

कांचीपुरम सिल्क

Kancheepuram Silk
तमिलनाडु

कांचीपुरम की भारी रेशमी साड़ियाँ, जिनके रंग चटख और ज़री (सुनहरे धागे) के किनारे ठोस होते हैं। 'पेटनी' तकनीक में अलग रंग का पल्लू बुनाई के दौरान साड़ी से इस तरह जोड़ा जाता है कि जोड़ दिखाई नहीं देता।

यहाँ क्यों: NCERT कक्षा 6 'समाज का अध्ययन: भारत और उसके आगे', अध्याय 8; NCERT कक्षा 8 'Exploring Society: India and Beyond (भाग 2)', अध्याय 7।

GI जर्नल 4, आवेदन 15

चंदेरी साड़ियाँ

Chanderi Sarees
मध्य प्रदेश

विंध्य की पहाड़ियों में बसे चंदेरी की साड़ियाँ, जो अपनी पारदर्शिता और महीन बनावट के लिए जानी जाती हैं। यह पारदर्शिता ऐसे धागे से आती है जिसका प्राकृतिक गोंद नहीं निकाला जाता, और जो ताने व बाने दोनों में लगता है। छोटे बूटे (बुट्टियाँ) हाथ से बनाए जाते हैं।

यहाँ क्यों: NCERT पुरानी कक्षा 7 'हमारे अतीत-2', अध्याय 8 (चंदेरी का रेशम)।

GI जर्नल 2, आवेदन 7

महेश्वर साड़ियाँ और कपड़े

Maheshwar Sarees & Fabrics
मध्य प्रदेश

नर्मदा के दोनों किनारों पर बसी महेश्वर और कसरावद तहसीलों की हथकरघा साड़ियाँ और कपड़े। इनके किनारे और पल्लू के डिज़ाइन महेश्वर में रानी अहिल्याबाई द्वारा 18वीं सदी में बनवाए गए किले की दीवारों की नक्काशी से लिए गए हैं।

यहाँ क्यों: NCERT कक्षा 8 'समाज का अध्ययन: भारत और उसके आगे (भाग 1)', अध्याय 3 (महेश्वर की बुनाई)।

GI जर्नल 44, आवेदन 197

पैठणी साड़ियाँ और कपड़े

Paithani Sarees And Fabrics
महाराष्ट्र

महाराष्ट्र के पैठण और येवला में बुनी जाने वाली रेशमी साड़ियाँ। किनारे पर तिरछे चौकोर का डिज़ाइन और पल्लू पर मोर होता है, जो सुनहरी ज़री में टेपेस्ट्री विधि से बुना जाता है। इसलिए साड़ी का उल्टा भाग भी लगभग सीधे भाग जैसा दिखता है।

यहाँ क्यों: NCERT कक्षा 6 'समाज का अध्ययन: भारत और उसके आगे', अध्याय 8।

GI जर्नल 33, आवेदन 150

पोचमपल्ली इकत

Pochampally Ikat
तेलंगाना

पोचमपल्ली के आसपास, नलगोंडा और वारंगल के कुछ हिस्सों के लगभग 40 गाँवों का इकत। सूती या रेशमी धागे को बुनाई से पहले तय डिज़ाइन के अनुसार बाँधकर रंगा जाता है। हीरे जैसे ('चौका') पैटर्न इसकी पहचान हैं, और सिंगल, कंबाईड व डबल, तीनों तरह का इकत बनता है।

यहाँ क्यों: NCERT कक्षा 12 'भारतीय इतिहास के कुछ विषय, भाग 2', विषय 5; NCERT कक्षा 10 'समकालीन भारत-2', अध्याय 4 (इकत; भूदान के प्रसंग में पोचमपल्ली)।

GI जर्नल 2, आवेदन 4

पाटन पटोला

Patan Patola
गुजरात

उत्तर गुजरात के पाटन का शुद्ध रेशमी डबल इकत, जिसे मुख्यतः साल्वी समुदाय हाथ से चलने वाले करघों पर बनाता है। ताना और बाना दोनों बुनाई से पहले बाँधकर रंगे जाते हैं, इसलिए डिज़ाइन दोनों तरफ़ एक जैसा होता है और कपड़ा दोनों ओर से इस्तेमाल हो सकता है।

यहाँ क्यों: NCERT कक्षा 6 'समाज का अध्ययन: भारत और उसके आगे', अध्याय 8।

GI जर्नल 50, आवेदन 232

ओडिशा इकत

Orissa Ikat
ओडिशा

पश्चिमी ओडिशा (बरगढ़, संबलपुर, सोनपुर, बलांगीर और आसपास के ज़िले) और कटक का हथकरघा कपड़ा, जिसके धागे बाँधकर रंगे जाते हैं। ज्यामितीय डिज़ाइनों के अलावा यह घुमावदार आकृतियों और कपड़े में बुने अक्षरों के लिए भी जाना जाता है।

यहाँ क्यों: NCERT कक्षा 12 'भारतीय इतिहास के कुछ विषय, भाग 2', विषय 5 (इकत बुनाई)।

GI जर्नल 12, आवेदन 22

कोटा डोरिया

Kota Doria
राजस्थान

कोटा के पास कैथून और कोटा, बूंदी व बारां ज़िलों के गाँवों में बुना जाने वाला हल्का, झीना कपड़ा। इसकी पहचान 'खत' नाम का चौकोर चेक है, जो इतनी कुशलता से बुना जाता है कि कपड़ा पारदर्शी हो जाता है।

यहाँ क्यों: संभावित: UPSC राज्यों के वस्त्र-शिल्प पूछता है, जैसे 2018 के प्रश्न 54 में।

GI जर्नल 5, आवेदन 12

कश्मीर पश्मीना

Kashmir Pashmina
जम्मू और कश्मीर

कश्मीर में 'पश्म' से बना कपड़ा। पश्म हिमालयी पश्मीना बकरी के महीन भीतरी रोएँ हैं, जो 12–16 माइक्रॉन के होते हैं, जबकि सबसे महीन भेड़ की ऊन लगभग 23 माइक्रॉन की होती है। रेशों को चावल के आटे के लेप से साफ़ करके हाथ से काता और बुना जाता है।

यहाँ क्यों: NCERT कक्षा 8 'Exploring Society: India and Beyond (भाग 2)', अध्याय 8 (पश्मीना शॉल)।

GI जर्नल 13, आवेदन 46

कानी शॉल

Kani Shawl
जम्मू और कश्मीर

कश्मीर के बडगाम ज़िले की पश्मीना शॉल, जो बिना शटल के बुनी जाती है। 'कानी' नाम की बिना छेद वाली छोटी लकड़ी की तीलियाँ हर रंग का बाना ले जाती हैं, और रंग बदलने पर हर बाना अगले बाने से गुँथ जाता है। इसे 'द्विल टेपेस्ट्री' बुनाई कहते हैं।

यहाँ क्यो: संभावित: UPSC राज्यों के वस्त्र-शिल्प पूछता है, जैसे 2018 के प्रश्न 54 में।
GI जर्नल 13, आवेदन 51

उप्पाडा जामदानी साड़ियाँ

Uppada Jamdani Sarees
आंध्र प्रदेश

पूर्वी गोदावरी के कोथापल्ली मंडल में उप्पाडा और आसपास के गाँवों की जामदानी साड़ियाँ। डिज़ाइन बिना डॉबी या जैकार्ड के हाथ से बुने जाते हैं, इसलिए वे कपड़े में घुल-मिल जाते हैं, उल्टी तरफ़ भी साफ़ दिखते हैं और कोई ढीला धागा नहीं छोड़ते।

यहाँ क्यो: UPSC प्रारंभिक परीक्षा 2018, प्रश्न 54 (उप्पाडा जामदानी साड़ियाँ)।
GI जर्नल 27, आवेदन 122

भागलपुर सिल्क

Bhagalpur Silk
बिहार

भागलपुर ज़िले (नाथनगर, चंपानगर जैसे क्लस्टर) के रेशमी कपड़े और साड़ियाँ, जो मुख्यतः तसर, मटका, एरी और शहतूती रेशम से बुने जाते हैं।

यहाँ क्यो: संभावित: UPSC राज्यों के वस्त्र-शिल्प पूछता है, जैसे 2018 के प्रश्न 54 में।
GI जर्नल 45, आवेदन 180

बंगाल की तांगाइल साड़ी

Tangail Saree of Bengal
पश्चिम बंगाल

मुख्यतः धात्रीग्राम और समुद्रगढ़ (पूर्व बर्धमान) और फुलिया (नदिया) में प्लाई-शटल पिट करघों पर बुनी जाने वाली साड़ियाँ। ये महीन सूत या रेशम की होती हैं, और किनारे व पल्लू पर अतिरिक्त ताने या बाने से डिज़ाइन बनाए जाते हैं।

यहाँ क्यो: नया GI (2024 में पंजीकृत); संभावित: UPSC राज्यों के वस्त्र-शिल्प पूछता है, जैसे 2018 के प्रश्न 54 में।
GI जर्नल 178, आवेदन 702

किन्नौरी शॉल

Kinnauri Shawl
हिमाचल प्रदेश

किन्नौर ज़िले की ऊनी शॉलें ('छाली'), जो प्रतीकात्मक अर्थ वाले बारीक ज्यामितीय पैटर्नों के लिए जानी जाती हैं। पैटर्न के पाँच रंग पाँच तत्वों के प्रतीक हैं: सफ़ेद जल का, पीला पृथ्वी का, लाल अग्नि का, हरा वायु का और नीला आकाश का।

यहाँ क्यो: संभावित: UPSC राज्यों के वस्त्र-शिल्प पूछता है, जैसे 2018 के प्रश्न 54 में।
GI जर्नल 32, आवेदन 149

असम का गमोसा

Gamosa of Assam
असम

सफ़ेद या क्रीम रंग का सूती कपड़ा, जिस पर लाल किनारे और आकृतियाँ होती हैं, और जो असम के हर ज़िले में बुना जाता है। यह असमिया संस्कृति का प्रतीक है: अनुष्ठानों में इसका उपयोग होता है, अतिथियों के स्वागत में इसे भेंट किया जाता है और बिहू में इसे पहना जाता है।

यहाँ क्यो: नया GI (2022 में पंजीकृत); संभावित: UPSC राज्यों के वस्त्र-शिल्प पूछता है, जैसे 2018 के प्रश्न 54 में।
GI जर्नल 124, आवेदन 594

संबलपुरी बंधा साड़ी और कपड़े

Sambalpur Bandha Saree & Fabrics
ओडिशा

संबलपुर और पश्चिमी ओडिशा के पड़ोसी ज़िलों की बाँधकर रंगी (इकत) साड़ियाँ और कपड़े। इसका सबसे पुराना रूप 'सक्तापार' साड़ी है, जिसमें डबल इकत का शतरंजी पैटर्न होता है। मछली, शंख, पक्षी और फूल इसकी आम आकृतियाँ हैं।

यहाँ क्यो: NCERT कक्षा 12 'भारतीय इतिहास के कुछ विषय, भाग 2', विषय 5 (इकत बुनाई)।
GI जर्नल 44, आवेदन 208

असम का मूगा रेशम

Muga Silk of Assam
असम

असम का सुनहरा-पीला रेशम, जो खुले में सोम और सोआलू पेड़ों पर पाले जाने वाले मूगा रेशम-कीटों से मिलता है। आवेदन के अनुसार सभी प्राकृतिक वस्त्र-रेशों में यह सबसे मज़बूत है। असमिया महिलाओं का पारंपरिक परिधान मेखला-चादर इसी से बुना जाता है।

यहाँ क्यो: NCERT कक्षा 6 'समाज का अध्ययन: भारत और उसके आगे', अध्याय 8।
GI जर्नल 16, आवेदन 55

बोडो एरी रेशम

Bodo Eri Silk
असम

असम के बोडोलैंड के बोडो लोगों का एरी रेशम, जिसे स्थानीय रूप से 'इंडी ज़ी' कहते हैं। इसका रेशम-कीट (सामिया रिसिनी) मुख्यतः अरंडी की पत्तियाँ खाता है। पतंगा खुले सिरे वाले कोकून से जीवित निकल जाता है, इसलिए इसे अहिंसा (शांति) रेशम कहते हैं। इसका छोटा रेशा रील करने के बजाय ऊन की तरह काता जाता है, और इससे गर्म शॉल (एरी-चादर) और मेखला-चादर बुने जाते हैं।

यहाँ क्यों: UPSC प्रारंभिक परीक्षा 2026, प्रश्न 29; नया GI (2024 में पंजीकृत)।
GI जर्नल 185, आवेदन 960

कुल्लू शॉल

Kullu Shawl
हिमाचल प्रदेश

ब्यास नदी के किनारे कुल्लू घाटी की ऊनी शॉलें, जो हथकरघे पर द्विल बुनाई की ज़मीन पर रंगीन ज्यामितीय किनारों के साथ बुनी जाती हैं। कढ़ाई वाली शॉलों के विपरीत इनका डिज़ाइन बुनाई में ही होता है और दोनों तरफ़ से एक जैसा दिखता है।

यहाँ क्यों: संभावित: UPSC राज्यों के वस्त्र-शिल्प पूछता है, जैसे 2018 के प्रश्न 54 में।
GI जर्नल 7, आवेदन 19

मैसूर सिल्क

Mysore Silk
कर्नाटक

मैसूर की शुद्ध रेशमी क्रेप-डी-शीन और जॉर्जेट साड़ियाँ, जिन्हें कर्नाटक सिल्क इंडस्ट्रीज़ कॉरपोरेशन (KSIC) बुनता है। इसकी मैसूर फैक्टरी 1912 में मैसूर के महाराजा ने शुरू की थी। किनारों और पल्लू की ज़री में 65% चाँदी और 0.65% सोना होता है।

यहाँ क्यों: NCERT कक्षा 6 'समाज का अध्ययन: भारत और उसके आगे', अध्याय 8।
GI जर्नल 3, आवेदन 11

बांग्लार मलमल

Banglar Muslin
पश्चिम बंगाल

पश्चिम बंगाल का सबसे महीन हथकरघा मलमल, जो पिट करघों पर 300 से 600 काउंट तक काते गए सूती धागे से बुना जाता है। कपड़ा इतना हल्का होता है कि एक वर्ग मीटर का वज़न 48 ग्राम से कम होता है। यह मुर्शिदाबाद, बांकुड़ा और मालदा जैसे ज़िलों में बनता है।

यहाँ क्यों: NCERT कक्षा 11 'भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास', अध्याय 1 (बंगाल का मलमल); नया GI (2024 में पंजीकृत)।
GI जर्नल 182, आवेदन 676

लद्दाख की पश्मीना ऊन

Pashmina Wool of Ladakh
लद्दाख (केंद्रशासित प्रदेश)

यह कच्चा रेशा है: लद्दाख के चांगथांग पठार की चांगथांगी बकरी का महीन भीतरी रोआँ, जो 16 माइक्रॉन से भी पतला होता है (20 माइक्रॉन से पतला बकरी का रेशा कैशमियर कहलाता है)। इसकी महीनता का श्रेय ऊँचे, ठंडे और शुष्क चरागाहों को दिया जाता है।

यहाँ क्यों: NCERT कक्षा 8 'Exploring Society: India and Beyond (भाग 2)', अध्याय 8 (लद्दाख की बकरियों की पश्मीना); नया GI (2023 में पंजीकृत)।
GI जर्नल 166, आवेदन 726

कढ़ाई

लखनऊ चिकन शिल्प

Lucknow Chikan Craft
उत्तर प्रदेश

लखनऊ की सफ़ेद पर सफ़ेद कढ़ाई, जो पारंपरिक रूप से मलमल पर होती थी। इसमें ज़्यादातर फूलदार डिज़ाइन बिना बटे महीन सूती, रेयॉन या रेशमी धागे से काढ़े जाते हैं। डिज़ाइन पहले धुल जाने वाले रंग से ठप्पे द्वारा छापा जाता है, फिर महिलाएँ कढ़ाई करती हैं और अंत में कपड़ा धोया जाता है।

यहाँ क्यों: संभावित: UPSC राज्यों के वस्त्र-शिल्प पूछता है, जैसे 2018 के प्रश्न 54 में।
GI जर्नल 25, आवेदन 119

फुलकारी

Phulkari
भारत (पंजाब, हरियाणा और राजस्थान)

पंजाब की 'फूलों की कढ़ाई', जो हरियाणा और राजस्थान के कुछ हिस्सों में भी होती है। मोटे खद्वर पर धागे गिनकर उल्टी तरफ़ से रफू टाँके लगाए जाते हैं। 'बा!!' में कढ़ाई पूरे कपड़े को ढक लेती है।

यहाँ क्यों: संभावित: UPSC राज्यों के वस्त्र-शिल्प पूछता है, जैसे 2018 के प्रश्न 54 में।
GI जर्नल 12, आवेदन 27

टोडा कढ़ाई

Toda Embroidery
तमिलनाडु

नीलगिरि की टोडा महिलाओं द्वारा ही की जाने वाली कढ़ाई। मोटे सफ़ेद सूती कपड़े पर लाल और काली ऊन से, धागे गिनकर, इतनी बारीकी से कढ़ाई होती है कि वह बुनाई जैसी लगती है। यह टोडा लबादे (शॉल) को सजाती है, जिसे जर्नल 'pootkhull(zh)y' लिखता है। UPSC के 2018 के प्रश्न का 'पुथुक्कुली' यही है।

यहाँ क्यों: UPSC प्रारंभिक परीक्षा 2018, प्रश्न 54 ('पुथुक्कुली शॉल'); NCERT कक्षा 6 'समाज का अध्ययन: भारत और उसके आगे', अध्याय 7 (नीलगिरि के टोडा)।
GI जर्नल 29, आवेदन 135

बिहार की सुजनी कढ़ाई

Sujini Embroidery Work of Bihar
बिहार

मुज़फ़्फ़रपुर ज़िले में भुसुरा के आसपास लगभग 15 गाँवों की महिलाओं द्वारा बनाई गई कढ़ाईदार चादरें, दीवार-सज्जा और कपड़े। आकृतियाँ पहले रोज़मर्रा के जीवन और प्रकृति पर थीं, अब इनमें बालिका शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे सामाजिक संदेश भी होते हैं।

यहाँ क्यों: UPSC प्रारंभिक परीक्षा 2018, प्रश्न 54 (सुजनी कढ़ाई)।
GI जर्नल 18, आवेदन 74

कसूती कढ़ाई

Kasuti Embroidery
कर्नाटक

धारवाड़ ज़िले की धागे गिनकर की जाने वाली कढ़ाई, जो पारंपरिक रूप से इलकल साड़ियों और ब्लाउज़ के कपड़ों पर होती है। कोई डिज़ाइन पहले से नहीं उकेरा जाता: टाँके ताने-बाने के धागे गिनकर लगते हैं, कढ़ाई का कोई उल्टा पक्ष नहीं होता और गाँठ नहीं लगती। पालकी, हाथी और कमल जैसी आकृतियाँ आम हैं।

यहाँ क्यों: संभावित: UPSC राज्यों के वस्त्र-शिल्प पूछता है, जैसे 2018 के प्रश्न 54 में।
GI जर्नल 11, आवेदन 31

कच्छ कढ़ाई

Kutch Embroidery
गुजरात

कच्छ ज़िले की कढ़ाई, जिसकी जड़ें ख़ारी और अन्य समुदायों की परंपराओं में हैं। पहले कपड़े पर धागे का जाल बनाया जाता है, फिर उसे उसी धागे के गुँथे हुए टाँकों से भरा जाता है। शीशे का काम (आभला) कपड़ों को चमकदार बनाता है।

यहाँ क्यों: संभावित: UPSC राज्यों के वस्त्र-शिल्प पूछता है, जैसे 2018 के प्रश्न 54 में।
GI जर्नल Supplementary 1, आवेदन 103

नक्शी कांथा

Nakshi Kantha
पश्चिम बंगाल

दो-तीन पुरानी साड़ियों या धोतियों की परतें रनिंग टाँके से जोड़कर बनाई गई कथरियाँ, जिन पर साड़ी के किनारों से निकाले गए धागों से फूल, पशु और घरेलू आकृतियाँ काढ़ी जाती हैं। जर्नल का मानचित्र इसे बीरभूम ज़िले में दिखाता है।

यहाँ क्यों: संभावित: UPSC राज्यों के वस्त्र-शिल्प पूछता है, जैसे 2018 के प्रश्न 54 में।
GI जर्नल 19, आवेदन 52

चंबा रुमाल

Chamba Rumal
हिमाचल प्रदेश

चंबा ज़िले के चौकोर कढ़ाईदार रुमाल, जिनमें 'दो-रुखा' दोहरे साटन टाँके से डिज़ाइन दोनों तरफ़ एक जैसा बनता है। रुपरेखा अक्सर पहाड़ी चित्रकार बनाते हैं, और कृष्ण व गोपियों का रासमंडल सबसे प्रिय विषय है।

यहाँ क्यों: संभावित: UPSC राज्यों के वस्त्र-शिल्प पूछता है, जैसे 2018 के प्रश्न 54 में।
GI जर्नल Supp 2, आवेदन 79

लखनऊ ज़रदोज़ी

Lucknow Zardozi
उत्तर प्रदेश

लखनऊ और बाराबंकी, उन्नाव, सीतापुर जैसे आसपास के ज़िलों में होने वाली सोने और धातु के धागे की कढ़ाई, जो साड़ियों, सूट, टोपियों, जूतियों, थैलों और समारोह की वस्तुओं पर की जाती है। सल्तनत काल से इस शिल्प को शाही संरक्षण मिलता रहा है।

यहाँ क्यों: NCERT कक्षा 8 'Exploring Society: India and Beyond (भाग 2)', अध्याय 8 (ज़रदोज़ी)।
GI जर्नल 49, आवेदन 236

कपड़े पर छपाई, रंगाई और चित्रकारी

मछलीपट्टनम कलमकारी

Machilipatnam Kalamkari
आंध्र प्रदेश

बंदरगाह शहर मछलीपट्टनम का हाथ से ठप्पा-छपा सूती कपड़ा, जिसे प्राकृतिक वनस्पति रंगों और मॉर्टेंट (रंग पक्का करने वाले पदार्थ) से रंगा जाता है। यह पूरे कपड़े पर फैले फूलदार और फ़ारसी शैली के डिज़ाइनों के लिए जाना जाता है।

यहाँ क्यों: UPSC प्रारंभिक परीक्षा 2017, प्रश्न 51 (काकतीय बंदरगाह के रूप में मछलीपट्टनम); NCERT पुरानी कक्षा 8 'हमारे अतीत-III', अध्याय 3 (कलमकारी)।

GI जर्नल Supplementary 1, आवेदन 90

मध्य प्रदेश के बाग़ प्रिंट

Bagh Prints of Madhya Pradesh
मध्य प्रदेश

धार ज़िले में बाघिनी नदी के किनारे बसे बाग़ गाँव की हाथ की ठप्पा छपाई। इसमें सफ़ेद ज़मीन पर मुख्यतः लाल और काले रंग के दोहराए जाने वाले ज्यामितीय पैटर्न प्राकृतिक वनस्पति रंगों से छापे जाते हैं।

यहाँ क्यों: संभावित: UPSC राज्यों के वस्त्र-शिल्प पूछता है, जैसे 2018 के प्रश्न 54 में।

GI जर्नल Supp 1, आवेदन 98

कच्छ अजरख

Kutch Ajrakh
गुजरात

कच्छ के तीन गाँवों, अजरखपुर, धमडका और खावड़ा, में आज भी जीवित प्रतिरोध (रेज़िस्ट) ठप्पा छपाई। कपड़े पर कई चरणों में सीधी और प्रतिरोध छपाई और प्राकृतिक रंगों से रंगाई होती है। इसे पारंपरिक रूप से पशुपालक मालधारी समुदाय पहनता है।

यहाँ क्यों: नया GI (दिसंबर 2023 में GI जर्नल में प्रकाशित); संभावित: UPSC राज्यों के वस्त्र-शिल्प पूछता है, जैसे 2018 के प्रश्न 54 में।

GI जर्नल 188, आवेदन 1050

बगरु हैंड ब्लॉक प्रिंट

Bagru Hand Block Print
राजस्थान

जयपुर ज़िले के बगरु और आसपास के गाँवों की हाथ की ठप्पा छपाई, ज़्यादातर मटमैली सफ़ेद ज़मीन पर वनस्पति रंगों से। प्रतिरोध लेप ('दाबू') स्थानीय काली मिट्टी से बनता है, और लकड़ी के ठप्पे स्थानीय खरादिये बनाते हैं।

यहाँ क्यों: संभावित: UPSC राज्यों के वस्त्र-शिल्प पूछता है, जैसे 2018 के प्रश्न 54 में।

GI जर्नल 37, आवेदन 183

कच्छ बांधणी

Kutch Bandhani
गुजरात

कच्छ ज़िले की बाँधकर रंगने की कला। रंगाई से पहले कपड़े को नाखून से उठाकर धागे से हज़ारों छोटी गाँठों में बाँधा जाता है, जिनसे 'राई दाना' जैसी बिंदियाँ बनती हैं। यह प्रक्रिया अक्सर कई दौर में होती है। इसे मुख्यतः खत्री समुदाय करता है।

यहाँ क्यों: नया GI (2024 में पंजीकृत); संभावित: UPSC राज्यों के वस्त्र-शिल्प पूछता है, जैसे 2018 के प्रश्न 54 में।

GI जर्नल 185, आवेदन 756

माता नी पछेड़ी

Mata ni Pachhedi
गुजरात

अहमदाबाद में बनने वाला पवित्र कपड़ा, जिसके बीच में मातृदेवी और बाक़ी हिस्से में उनकी कथाएँ होती हैं। इसे सूती कपड़े पर प्राकृतिक और खनिज रंगों से हाथ से चित्रित किया जाता है या ठप्पे से छपा जाता है। नाम का अर्थ है 'माता के पीछे'।

यहाँ क्यों: NCERT कक्षा 12 'भारतीय कला का परिचय, भाग 2', अध्याय 8 ('पछेड़ी' पट-चित्र); नया GI (2023 में पंजीकृत)।

GI जर्नल 166, आवेदन 694

कच्छ रोगन शिल्प

Kutch Rogan Craft
गुजरात

'रोगन' से कपड़े पर चित्रकारी। अरंडी के तेल को घंटों उबालकर गाढ़ा लेप बनाया जाता है और उसमें रंग मिलाया जाता है। भुज, अंजार, रापर और नखत्राणा तालुकों के कारीगर इसे सलाई से महीन धागे की तरह खींचकर, बिना किसी रूपरेखा के, हाथ से चित्र बनाते हैं। फ़ारसी में 'रोगन' का अर्थ है 'तेल से बना'।

यहाँ क्यों: नया GI (2024 में पंजीकृत); संभावित: UPSC राज्यों के वस्त्र-शिल्प पूछता है, जैसे 2018 के प्रश्न 54 में।

GI जर्नल 182, आवेदन 718

श्रीकालहस्ती कलमकारी

Srikalahasthi Kalamkari
आंध्र प्रदेश

श्रीकालहस्ती की क़लम से बनाई जाने वाली कलमकारी। कपड़े को हरड़ (मायरोबालन) और भैंस के दूध से उपचारित किया जाता है। फिर 'क़लम' (ऊन लिपटी बाँस की तीली) से लोहे का सिरका, फिटकरी, वनस्पति रंग और प्राकृतिक नील टपकाकर रूपरेखा और रंग भरे जाते हैं।

यहाँ क्यों: NCERT पुरानी कक्षा 8 'हमारे अतीत-III', अध्याय 3 (कलमकारी)।

GI जर्नल 9, आवेदन 28

सांगानेरी हैंड ब्लॉक प्रिंटिंग

Sanganeri Hand Block Printing
राजस्थान

जयपुर से 16 किलोमीटर दूर सांगानेर की हाथ की ठप्पा छपाई। सफ़ेद ज़मीन पर नाज़ुक फूलदार आकृतियाँ लकड़ी के ठप्पों से दोहराए जाने वाले डिज़ाइनों में छापी जाती हैं, और छपाई कपड़े के नीचे की तरफ़ भी लगभग उतनी ही साफ़ दिखती है।

यहाँ क्यों: संभावित: UPSC राज्यों के वस्त्र-शिल्प पूछता है, जैसे 2018 के प्रश्न 54 में।
GI जर्नल 30, आवेदन 147

चित्रकला परंपराएँ

मधुबनी चित्रकला

Madhubani Painting
बिहार

महिलाओं द्वारा दीवारों, फर्श, कपड़े और कागज़ पर बनाए जाने वाले चित्र, जिनकी शैली में कोई जगह खाली नहीं छोड़ी जाती। सबसे विस्तृत चित्र कोहबर (विवाह-कक्ष) में दंपति के आशीर्वाद के लिए बनते हैं, जिनमें मछली, तोता, सूर्य और चंद्रमा जैसी आकृतियाँ होती हैं।

यहाँ क्यों: NCERT कक्षा 12 'भारतीय कला का परिचय, भाग 2', अध्याय 8; NCERT कक्षा 11 'भारतीय कला का परिचय, भाग 1', अध्याय 5।
GI जर्नल 14, आवेदन 37

ओडिशा पट्टचित्र

Orissa Pattachitra
ओडिशा

'पट्ट' पर बने चित्र। पट्ट सूती कपड़े की परतों को इमली के बीज के गोंद और खड़िया से जोड़कर बना कड़ा कैनवास है, जिस पर वनस्पति और खनिज रंगों से चित्र बनते हैं। पुरी में जगन्नाथ मंदिर आने वाले तीर्थयात्रियों के लिए बने इन चित्रों में जगन्नाथ, कृष्ण, विष्णु के अवतार और महाकाव्यों की कथाएँ होती हैं।

यहाँ क्यों: NCERT कक्षा 12 'भारतीय कला का परिचय, भाग 2', अध्याय 8; NCERT कक्षा 8 'Exploring Society: India and Beyond (भाग 2)', अध्याय 8।
GI जर्नल Supp1, आवेदन 88

वारली चित्रकला

Warli Painting
भारत (महाराष्ट्र, गुजरात, दादरा और नगर हवेली, दमन और दीव)

वारली और मल्हार कोली जनजातियों की अनुष्ठानिक चित्रकला (महाराष्ट्र में दहानू और जव्हार के आसपास, और गुजरात, दादरा और नगर हवेली तथा दमन और दीव में)। इसमें एक ही रंग होता है: मिट्टी और गोबर से लिपी दीवार पर चावल के लेप का सफ़ेद रंग। वृत्त, त्रिभुज, वर्ग और रेखाओं से, बिना रूपरेखा के, सीधे हाथ से चित्र बनाए जाते हैं।

यहाँ क्यों: NCERT कक्षा 12 'भारतीय कला का परिचय, भाग 2', अध्याय 8; NCERT कक्षा 11 'भारतीय कला का परिचय, भाग 1', अध्याय 5।
GI जर्नल 54, आवेदन 239

तंजावुर चित्रकला

Thanjavur Painting
तमिलनाडु

गोल देह और बादामी आँखों वाले एक मुख्य देवता के चित्र, जो कटहल की लकड़ी के तख्ते पर कपड़ा चिपकाकर और खड़िया का लेप लगाकर बनाए जाते हैं। गहनों और वस्त्रों को सोने की पत्नी और क्रीमती या अर्ध-क्रीमती पत्थरों से उभारा जाता है।

यहाँ क्यों: संभावित: UPSC चित्रकला परंपराएँ पूछता है, जैसे 2018 के प्रश्न 42 में।
GI जर्नल 14, आवेदन 47

कांगड़ा चित्रकला

Kangra Paintings
हिमाचल प्रदेश

पुराने कांगड़ा ज़िले (आज के कांगड़ा, हमीरपुर और ऊना) की लघु चित्रकला, जो वैष्णव भक्ति से प्रेरित है। प्रेम इसका प्रमुख विषय है: केशवदास की 'रसिकप्रिया' के राधा-कृष्ण, 'गीत गोविंद', और हीर-राँझा जैसी प्रेम-कथाएँ।

यहाँ क्यों: UPSC प्रारंभिक परीक्षा 2018, प्रश्न 42 (विकल्प में कांगड़ा शैली); NCERT कक्षा 12 'भारतीय कला का परिचय, भाग 2', अध्याय 5।
GI जर्नल 55, आवेदन 381

नाथद्वारा पिछवाई चित्रकला

Nathdwara Pichhwai Painting
राजस्थान

मेवाड़ (राजसमंद और उदयपुर ज़िले) के नाथद्वारा की कपड़े पर बनी चित्रकारी, जो श्रीनाथजी (कृष्ण) की मूर्ति के पीछे टाँगी जाती है। 'पिछवाई' का अर्थ है पीछे टाँगा जाने वाला पर्दा। आकृतियों की आँखें बड़ी, नाक चौड़ी और देह भारी होती है, और रंग प्राकृतिक होते हैं।

यहाँ क्यों: NCERT कक्षा 12 'भारतीय कला का परिचय, भाग 2', अध्याय 2, 8; नया GI (2023 में पंजीकृत)।
GI जर्नल 172, आवेदन 748

चेरियाल चित्रकला

Cheriyal Paintings
तेलंगाना

कलफ़ लगे खादी कपड़े पर बने लंबे चित्रित स्क़ॉल, जिनकी पृष्ठभूमि ज्यादातर लाल होती है। काकी पडगोल्लू समुदाय के कथावाचक रामायण, महाभारत और सामुदायिक कथाएँ सुनाते समय इन्हें दृश्य सहायता के रूप में इस्तेमाल करते हैं।

यहाँ क्यों: संभावित: UPSC चित्रकला परंपराएँ पूछता है, जैसे 2018 के प्रश्न 42 में।
GI जर्नल 35, आवेदन 190

मध्य प्रदेश की गोंड चित्रकला

Gond Painting of Madhya Pradesh
मध्य प्रदेश

भारत की सबसे बड़ी जनजातियों में से एक, गोंड, की चित्रकला, जो मुख्यतः अनूपपुर, डिंडोरी और मंडला ज़िलों में होती है। बिंदुओं और रेखाओं से बनी ये कृतियाँ लोककथाएँ और अनुष्ठान दिखाती हैं, और मनुष्य व प्रकृति का रिश्ता भी।

यहाँ क्यों: NCERT कक्षा 12 'भारतीय कला का परिचय, भाग 2', अध्याय 8; नया GI (2023 में पंजीकृत)।
GI जर्नल 165, आवेदन 701

मंजूषा कला

Manjusha Art
बिहार

भागलपुर (प्राचीन अंग क्षेत्र) की रेखा-चित्रकला, जिसमें केवल तीन रंग होते हैं: गुलाबी, हरा और पीला। आकृतियाँ अंग्रेज़ी अक्षर X जैसी बनाई जाती हैं, और हर चित्र में पाँच तय किनारों (जैसे साँपों की श्रृंखला) में से कम से कम एक होता है। मुख्य पात्रों में बिहुला, बाला और देवी बिषहरी (मनसा) हैं।

यहाँ क्यों: संभावित: UPSC चित्रकला परंपराएँ पूछता है, जैसे 2018 के प्रश्न 42 में।
GI जर्नल 136, आवेदन 656

धातु शिल्प

बिदरीवेयर

Bidriware
कर्नाटक

बीदर का बिदरी काम: जस्ते और ताँबे की मिश्रधातु को ढालकर उस पर नक्काशी की जाती है और चाँदी (कभी-कभी सोना) जड़ी जाती है। फिर इसे केवल बीदर के आसपास मिलने वाली मिट्टी के घोल में डुबोया जाता है। यह शिल्प बहमनी सुल्तान अहमद शाह (1422-1436) के समय विकसित हुआ।

यहाँ क्यों: NCERT कक्षा 7 'जिज्ञासा', अध्याय 4।
GI जर्नल 10, आवेदन 20

बस्तर ढोकरा

Bastar Dhokra
छत्तीसगढ़

बस्तर की बेल-मेटल (घंटा धातु) आकृतियाँ, जो लुप्त-मोम (लॉस्ट-वैक्स) विधि से ढाली जाती हैं और ढलाई से पहले मोम के महीन धागों से सजाई जाती हैं। इन्हें घड़वा समुदाय बनाता है, और इनमें आदिवासी जीवन, देवी-देवता, पशु और प्रकृति दिखते हैं। आवेदन इस तकनीक को मोहनजोदड़ो की कांसे की 'नर्तकी' तक ले जाता है।

यहाँ क्यों: NCERT कक्षा 12 'भारतीय कला का परिचय, भाग 2', अध्याय 8; NCERT कक्षा 8 'जिज्ञासा', अध्याय 8।
GI जर्नल 24, आवेदन 83

आरनमुला कन्नाडी

Aranmula Kannadi (Aranmula Metal Mirror)
केरल

काँच का नहीं, बल्कि चमकाई गई धातु का दर्पण, जो केवल केरल के पतनमट्टिड़ा ज़िले में पंबा नदी के किनारे आरनमुला में बनता है। इसे ताँबे और टिन के ऊँचे टिन वाले काँसे से ढाला जाता है, जिसका सटीक नुस्खा गुप्त रखा जाता है, और यह बिना किसी विकृति के प्रतिबिंब देता है।

यहाँ क्यों: NCERT कक्षा 7 'जिज्ञासा', अध्याय 11।
GI जर्नल 3, आवेदन 3

स्वामीमलई कांस्य प्रतिमाएँ

Swamimalai Bronze Icons
तमिलनाडु

तंजावुर के पास स्वामीमलई में मोम के मॉडल से ढाली गई ठोस कांस्य और पंचलोह मूर्तियाँ, जो शिल्प शास्त्रों के नियमों के अनुसार बनती हैं। साँचों में कावेरी के किनारे की जलोढ़ मिट्टी लगती है, और शैली चोल काल से चली आ रही है।

यहाँ क्यों: NCERT कक्षा 11 'भारतीय कला का परिचय, भाग 1', अध्याय 7 (चोल कांस्य मूर्तियाँ)।
GI जर्नल 16, आवेदन 64

मुरादाबाद धातु शिल्प

Moradabad Metal Craft
उत्तर प्रदेश

मुरादाबाद के पीतल और अन्य धातु के सामान, जो दूसरी जगहों पर बने ऐसे सामान से हल्के होने के लिए जाने जाते हैं। भीतर से अतिरिक्त धातु छीलकर हटाई जाती है, और भीतरी हिस्से को भी बाहरी हिस्से जितनी सफ़ाई से तैयार किया जाता है।

यहाँ क्यों: NCERT कक्षा 8 'Exploring Society: India and Beyond (भाग 2)', अध्याय 7।
GI जर्नल 54, आवेदन 161

उदयपुर कोफ़्तगरी धातु शिल्प

Udaipur Koftgari Metal Craft
राजस्थान

उदयपुर और चित्तौड़गढ़ की कोफ़्तगरी: लोहे की सतह पर चाकू (चिरनी) से बारीक जाली जैसी खरोंचें बनाई जाती हैं, उनमें सोने-चाँदी का तार दबाकर भरा जाता है और चंद्रकांत पत्थर (मूनस्टोन) से घिसकर सतह चिकनी की जाती है। पहले इससे मेवाड़ की तलवारें, ढालें और कवच सजाए जाते थे।

यहाँ क्यों: नया GI (2023 में पंजीकृत)।
GI जर्नल 173, आवेदन 747

लकड़ी, खिलौने और फ़र्नीचर

चन्नपट्टण खिलौने और गुड़िया

Channapatna Toys And Dolls
कनटिक

बेंगलुरु के पास चन्नपट्टण के लाख-रंगे लकड़ी के खिलौने, जो नरम और हल्की 'हाले' लकड़ी से खराद पर बनते हैं। घूमती लकड़ी पर रंगीन लाख की छड़ें दबाई जाती हैं, और घर्षण की गर्मी से लाख पिघलकर समान परत बना देती है। अंत में ताड़ के पत्ते से चमक दी जाती है।

यहाँ क्यों: NCERT कक्षा 8 'Exploring Society: India and Beyond (भाग 2)', अध्याय 7।
GI जर्नल 10, आवेदन 23

एप्लिक, घास, मुखौटे, कठपुतली और क़ालीन

पिपली एप्लिक

Pipli Applique Work
ओडिशा

पिपली और पुरी का एप्लिक काम। रंगीन कपड़े के टुकड़ों (पारंपरिक रूप से लाल, सफ़ेद, काले और पीले) को हाथी, मोर और फूल जैसी आकृतियों में काटकर आधार कपड़े पर सिला जाता है। इससे चंदोवे, छत्र और धार्मिक उपयोग के पंखे बनते हैं।

यहाँ क्यों: संभावित: UPSC राज्यों के वस्त्र-शिल्प पूछता है, जैसे 2018 के प्रश्न 54 में।
GI जर्नल Supp2, आवेदन 86

बिहार का एप्लिक (खटवा) काम

Applique (Khatwa) Work of Bihar
बिहार

सीतामढ़ी और मधुबनी ज़िलों में मुख्यतः महिलाओं द्वारा किया जाने वाला एप्लिक काम। पतले सफ़ेद कपड़े से काटी गई आकृतियाँ लाल या नारंगी आधार पर सिली जाती हैं, और इनसे शामियाने, तंबू और दीवार-सज्जा बनती है।

यहाँ क्यों: संभावित: UPSC राज्यों के वस्त्र-शिल्प पूछता है, जैसे 2018 के प्रश्न 54 में।
GI जर्नल 18, आवेदन 73

पुरुलिया छऊ मुखौटा

Purulia Chau Mask
पश्चिम बंगाल

पुरुलिया के बागमुंडी प्रखंड के चरिदा गाँव में छऊ नृत्य के लिए बनने वाले मुखौटे, जो मिट्टी, कागज़ की लुगदी और गारे से बनाकर रंगे और ज़री से सजाए जाते हैं। रंग पात्र का संकेत देते हैं: राम का मुखौटा हरा और कृष्ण का नीला होता है।

यहाँ क्यों: UPSC प्रारंभिक परीक्षा 2024, प्रश्न 60 (विकल्प में छऊ नृत्य)।
GI जर्नल 101, आवेदन 565

असम का माजुली मुखौटा

Majuli Mask of Assam
असम

ब्रह्मपुत्र के नदी-द्वीप माजुली के मुखौटे, जो बाँस, बेंत, कपड़े और मिट्टी से भाओना के लिए बनते हैं। भाओना शंकरदेव द्वारा शुरू किए गए वैष्णव नाटक हैं। रावण, गरुड़ और नरसिंह जैसे पात्र ठीक वैसे गढ़े जाते हैं जैसा उनके नाटकों में वर्णन है, और कुछ मुखौटे पूरे सिर और शरीर को ढकते हैं।

यहाँ क्यों: NCERT कक्षा 11 'भारत: भौतिक पर्यावरण', अध्याय 6; NCERT कक्षा 11 'Knowledge Traditions and Practices of India, Part I', अध्याय 3 (माजुली द्वीप; सत्रिया नृत्य); नया GI (2024 में पंजीकृत)।
GI जर्नल 182, आवेदन 939

आंध्र प्रदेश की चमड़ा कठपुतली

Andhra Pradesh Leather Puppetry
आंध्र प्रदेश

निम्नलकुंटा और नरसरावपेट की चर्मपत्र-चमड़े की कठपुतलियाँ, जो छाया-नाटक 'तोलु बोम्मलाटा' में इस्तेमाल होती हैं। हनुमान, रावण जैसे महाकाव्य-पात्र वनस्पति रंगों से रंगे जाते हैं और उनमें बारीक छेद करके डिज़ाइन बनाए जाते हैं। आज यही काम लैंपशेड और दीवार-सज्जा में भी दिखता है।

यहाँ क्यों: NCERT कक्षा 11 'Knowledge Traditions and Practices of India, Part I', अध्याय 3 (तोलु बोम्मलाटा छाया-कठपुतली)।
GI जर्नल Supplementary 2, आवेदन 107

भदोही का हस्तनिर्मित क़ालीन

Hand Made Carpet of Bhadohi
उत्तर प्रदेश

भदोही क्षेत्र (भदोही ज़िला और मिर्ज़ापुर, वाराणसी व आसपास के ज़िलों के हिस्से) के हाथ से गाँठे गए रोएँदार क़ालीन। आवेदन इसे हस्तनिर्मित क़ालीनों का दुनिया का सबसे बड़ा केंद्र बताता है। ऊर्ध्वाधर करघों पर ऊन की गाँठें लगाई जाती हैं, प्रति वर्ग इंच 30 से 300 गाँठों तक।

यहाँ क्यों: संभावित: UPSC राज्यों के वस्त्र-शिल्प पूछता है, जैसे 2018 के प्रश्न 54 में।
GI जर्नल 33, आवेदन 148

4. हर पंजीकृत हस्तशिल्प GI, राज्य-दर-राज्य

नाम वैसे ही जैसे पंजीकृत हैं, 31 दिसंबर 2025 तक: 349 हस्तशिल्प पंजीकरणों से 346 शिल्प (दो बार पंजीकृत शिल्प और लोगो पंजीकरण एक ही बार)।

Andaman and Nicobar Islands (4): Nicobari Canoe - Hodi Craft of Andaman & Nicobar; Nicobari Hut of Andaman & Nicobar; Nicobari Mat (Chatrai / Hileuoi) of Andaman & Nicobar; Padauk Wood Craft of Andaman & Nicobar

Andhra Pradesh (16): Allagadda Stone Carving; Andhra Pradesh Leather Puppetry; Bobbili Veena; Budithi Bell & Brass Metal Craft; Dharmavaram Handloom Pattu Sarees And Paavadas; Durgi Stone Carvings; Etikoppaka Toys; Kondapalli Bommalu; Machilipatnam Kalamkari; Mangalagiri Sarees And Fabrics; Narasapur Crochet Lace Products; Ponduru Khadi; Srikalahasthi Kalamkari; Udayagiri Wooden Cutlery; Uppada Jamdani Sarees; Venkatagiri Sarees

Arunachal Pradesh (11): Arunachal Pradesh Adi Textile; Arunachal Pradesh Apatani Textile; Arunachal Pradesh Galo Textile; Arunachal Pradesh Handmade Carpet; Arunachal Pradesh Monpa Handmade Paper; Arunachal Pradesh Monpa Textile; Arunachal Pradesh Nyishi Textile; Arunachal Pradesh Tai Khamti Textile; Arunachal Pradesh Tangsa Textile Product; Arunachal Pradesh Wancho Wooden Craft; Idu Mishmi Textiles

Assam (21): Assam Asharikandi Terracotta Craft; Assam Bihu Dhol; Assam Jaapi; Assam Majuli Manuscript Painting; Assam Pani Meteka Craft; Axomiya Gohona (Assamese Jewellery); Bodo Aronai; Bodo Dokhona; Bodo Eri Silk; Bodo Gamsa; Bodo Gongona; Bodo Jotha; Bodo Jwmgra; Bodo Kham; Bodo Serja; Bodo Sifung; Bodo Thorkha; Gamosa of Assam; Majuli Mask of Assam; Muga Silk of Assam; Sarthebari Metal Craft

Bihar (6): Applique (Khatwa) Work of Bihar; Bhagalpur Silk; Madhubani Painting; Manjusha Art; Sikki Grass Products of Bihar; Sujini Embroidery Work of Bihar

Chhattisgarh (4): Bastar Dhokra; Bastar Iron Craft; Bastar Wooden Craft; Champa Silk Saree And Fabrics

Gujarat (20): Agates of Cambay; Ahmedabad Sodagari Block Print; Bharuch Sujani Weaving; Gharchola Craft of Gujarat; Gujarat Suf Embroidery; Jamnagari Bandhani; Kachchh Shawls; Kutch Ajrak; Kutch Bandhani; Kutch Embroidery; Kutch Rogan Craft; Mata ni Pachhedhi; Patan Patola; Pethapur Printing Blocks; Pithora; Rajkot Patola; Sankheda Furniture; Surat Sadeli Craft; Surat Zari Craft; Tangaliya Shawl

Himachal Pradesh (6): Chamba Chappal; Chamba Rimal; Kangra Paintings; Kinnauri Shawl; Kullu Shawl; Lahauli Knitted Socks & Gloves

India (Assam and Arunachal Pradesh) (1): Assam Mishing Handloom Products

India (Karnataka & Maharashtra) (1): Kolhapuri Chappal

India (Maharashtra, Gujarat, Dadara & Nagar Haveli, Daman Diu) (1): Warli Painting

India (Punjab, Haryana & Rajasthan) (1): Phulkari

Jammu & Kashmir (18): Basohli Painting; Basohli Pashmina Woolen Products; Gabba; Kani Shawl; Kashmir Chain Stitch; Kashmir Crewel; Kashmir Namda; Kashmir Paper Machie; Kashmir Pashmina; Kashmir Sozani Craft; Kashmir Tweed; Kashmir Wagguv; Kashmir Walnut Wood Carving; Kashmir Willow Bat; Kashmiri Hand Knotted Carpet; Khatamband; Rajouri Chikri Wood Craft; Shikara

Jharkhand (1): Sohrai – Khovar Painting

Karnataka (16): Bidriware; Channapatna Toys And Dolls; Ganjifa Cards of Mysore; Guledgudd Khana; Ilkal Sarees; Karnataka Bronzeware; Kasuti Embroidery; Kinnhal Toys; Molakalmuru Sarees; Mysore Rosewood Inlay; Mysore Silk; Mysore Traditional Paintings; Navalgund Durries; Patteda Anchu Saree & Fabrics; Sandur Lambani Embroidery; Udupi Sarees

Kerala (13): Alleppey Coir; Aranmula Kannadi (Aranmula Metal Mirror); Balaramapuram Sarees And Fine Cotton Fabrics; Brass Brodered Coconut Shell Crafts of Kerala; Cannanore Home Furnishings; Chendamangalam Dhoties & Set Mundu; Kannadippaya (Bamboo Mat); Kasaragod Sarees; Kuthampully Dhoties & Set Mundu; Kuthampully Sarees; Maddalam of Palakkad; Payyannur Pavithra Ring; Screw Pine Craft of Kerala

Ladakh (UT) (2): Ladakh Shingskos (Wood Carving); Pashmina Wool of Ladakh

Madhya Pradesh (16): Bagh Prints of Madhya Pradesh; Bell Metal Ware of Datia and Tikamgarh; Betul Bharewa Metal Craft; Chanderi Sarees; Chhatarpur Furniture; Gond Painting of Madhya Pradesh; Gwalior Handmade Carpet; Gwalior Papier Mache Craft; Gwalior Stone Craft; Jabalpur Stone Craft; Khajuraho Stone Craft Of Madhya Pradesh; Leather Toys of Indore; Maheshwar Sarees & Fabrics; Ujjain Batik Print; Waraseoni Handloom Saree & Fabrics; Wrought Iron Crafts of Dindori

Maharashtra (12): Hupari Silver Craft; Karvath Kati Sarees And Fabrics; Kavdi Maal of Tuljapur; Miraj Sitar; Miraj Tanpura; Paithani Sarees And Fabrics; Pen Ganesh Idol; Puneri Pagadi; Sawantwadi Ganjifa Cards; Sawantwadi Wooden Craft; Solapur Chaddar; Solapur Terry Towel

Manipur (3): Moirang Phee; Shaphee Lanphee; Wangkhei Phee

Meghalaya (4): Meghalaya Garo Textile; Meghalaya Khasi Handloom Products; Meghalaya Lyrnai Pottery; Meghalaya Ryndia Textile

Mizoram (5): Hmaram; Mizo Puanchei; Ngotekherh; Pawndum; Tawlhlohpuan

Nagaland (1): Chakhesang Shawl

Odisha (15): Berhampur Patta (Phoda Kumbha) Saree & Joda; Bomkai Saree & Fabrics; Cuttack Rupa Tarakasi (Silver Filigree); Dhalapathar Parda & Fabrics; Gopalpur Tussar Fabrics; Habaspuri Saree & Fabrics; Kapadaganda: Dungaria Kondh Embroidery Shawl; Khandua Saree And Fabrics; Konark Stone Carving; Kotpad Handloom Fabric; Orissa Ikat; Orissa Pattachitra; Painting of Lanjia Saura (IDITAL), Odisha; Pipli Applique Work; Sambalpuri Bandha Saree & Fabrics

Puducherry (Pondicherry) (2): Tirukanur Papier Mache Craft; Villianur Terracotta Works

Rajasthan (13): Bagru Hand Block Print; Bikaner Kashidakari Craft; Bikaner Usta Kala Craft; Blue Pottery of Jaipur; Jodhpur Bandhej Craft; Kathputlis of Rajasthan; Kota Doria; Molela Clay Work; Nathdwara Pichhwai Painting; Pokaran Pottery; Sangneri Hand Block Printing; Thewa Art Work; Udaipur Koftgari Metal Craft

Tamil Nadu (37): Ambasamudram Choppu Saman (Wooden Toys); Arani Silk; Arumbavur Wood Carvings; Bhavani Jamakkalam; Chedibutta Saree; Chettinad Kottan; Dindigul Locks; Jaderi Namakatti; Kallakurichi Wood Carving; Kancheepuram Silk; Kandangi Saree; Karuppur Kalamkari Paintings; Kovai Kora Cotton Sarees; Madurai Sungudi; Mahabalipuram Stone Sculpture; Manamadurai Pottery; Myladi Stone Carvings; Nachiarkoil Kuthuvilakku ("Nachiarkoil Lamp"); Namakkal Maakkal Paattirangal; Narasinghapettai Nagaswaram; Negamam Cotton Saree; Pattamadai Pai ("Pattamadai Mat"); Salem Fabric; Salem Silk known as Salem Venpattu; Swamimalai Bronze Icons; Temple Jewellery of Nagercoil; Thakkal Rattan Craft; Thanjavur Art Plate; Thanjavur Doll; Thanjavur Netti Works; Thanjavur Painting; Thanjavur Veenai; Thirubuvanam Silk Sarees; Thovalai Maanika Maalai; Toda Embroidery; Vilachery Clay Toys; Woraiyur Cotton Saree

Telangana (14): Adilabad Dokra; Cheriya Paintings; Gadwal Sarees; Hyderabad Lac Bangles; Narayanpet Handloom Sarees; Nirmal Furniture; Nirmal Paintings; Nirmal Toys and Craft; Pembarthi Metal Craft; Pochampally Ikat; Siddipet Gollabama; Silver Filigree of Karimnagar; Telia Rumaal; Warangal Durries

Tripura (2): Tripura Pachra-Rignai Textile; Tripura Risa Textile

Uttar Pradesh (55): Agra Durrie; Agra Stone Inlay Work; Aligarh Tala; Amroha Dholak; Baghpat Home Furnishings; Bakhira Brassware; Banaras Brocades And Sarees; Banaras Gulabi Meenakari Craft; Banaras Hand Block Print; Banaras Metal Casting Craft; Banaras Metal Repouse Craft; Banaras Mural Painting; Banaras Shehnai; Banaras Tabla; Banaras Wood Carving; Banaras Zardozi; Banda Shazar Patthar craft; Barabanki Handloom Product; Bareilly Cane & Bamboo Craft; Bareilly Terracotta; Bareilly Zari Zardoji; Chitrakoot Wooden Craft & Toys; Chunar Glaze Pottery; Farrukhabad Prints; Firozabad Glass; Ghazipur Wall Hanging; Gorakhpur Terracotta; Hand Made Carpet of Bhadohi; Jalesar Dhatu Shilp (Metal Craft); Kalpi Handmade Paper; Kanpur Saddlery; Khurja Pottery; Lucknow Chikan Craft; Lucknow Zardozi; Mahoba Gaura Patthar Hastashlip; Mainpuri Tarkashi; Mathura Sanjhi Craft; Mathura Zari Poshak; Mau Saree; Mirzapur Handmade Dari; Mirzapur Pital Bartan; Moonj Craft of Uttar Pradesh; Moradabad Metal Craft; Nagina Wood Craft; Nizamabad Black Clay Pottery; Patchwork of Rampur; Pilibhit Bansuri; Pilkhuwa Hand Block Print Textile; Saharanpur Wood Craft; Sambhal Bone Craft; Sambhal Horn Craft; Tharu Embroidery of Uttar Pradesh; Varanasi Glass Beads; Varanasi Soft Stone Jali Work; Varanasi Wooden Lacquerware & Toys

Uttarakhand (9): Bhotia Dann of Uttarakhand; Chamoli Wooden Ramman Mask; Rangwali Pichhoda of Kumaon; Uttarakhand Aipan; Uttarakhand Bichhu Buti (Nettle) Fabrics; Uttarakhand Likhai (Wood Carving); Uttarakhand Ringal Craft; Uttarakhand Tamta Product; Uttarakhand Thulma

West Bengal (16): Baluchari Saree; Banglar Muslin; Bankura Panchmura Terracotta Craft; Bengal Dokra; Bengal Patachitra; Dhaniakhali Saree; Garad Saree; Korail saree; Madurkathi; Malda Nistari Silk Yarn; Nakshi Kantha; Purulia Chau Mask; Santiniketan Leather Goods; Santipore Saree; Tangail Saree of Bengal; Wooden Mask of Kushmandi

स्रोत: [GI Registry, 'Details of GI Applications Registered as on December 31, 2025' \(State wise Registered GI of India.pdf\)](https://pib.gov.in/Press-Release-Details.aspx?relid=2148297)

5. सरकार हस्तशिल्प को कैसे सहारा देती है

- वस्त्र मंत्रालय इस क्षेत्र के लिए चार मुख्य योजनाएँ चलाता है: राष्ट्रीय हथकरघा विकास कार्यक्रम, कच्चा माल आपूर्ति योजना, राष्ट्रीय हस्तशिल्प विकास कार्यक्रम (NHDP) और व्यापक हस्तशिल्प क्लस्टर विकास योजना (CHCDS)।
स्रोत: [PIB, Ministry of Textiles, 25 July 2025 \(Release ID 2148297\)](https://pib.gov.in/Press-Release-Details.aspx?relid=2148297)
- NHDP हस्तशिल्प की प्रमुख योजना है। इसके कौशल घटकों में गुरु शिष्य हस्तशिल्प प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल है, जिसमें कुशल शिल्पकार नए कारीगरों को प्रशिक्षित करते हैं।
स्रोत: [PIB backgrounder 'Handicrafts at the Heart of India's Rural Economy', 9 Dec 2025](https://pib.gov.in/Press-Release-Details.aspx?relid=2148297)
- CHCDS आधुनिक बुनियादी ढाँचे वाले शिल्प क्लस्टर विकसित करती है, ताकि कारीगर और छोटे उद्यम अधिक उत्पादन और निर्यात कर सकें।
स्रोत: [PIB backgrounder 'Handicrafts at the Heart of India's Rural Economy', 9 Dec 2025](https://pib.gov.in/Press-Release-Details.aspx?relid=2148297)
- 'पहचान' कार्ड कारीगरों को औपचारिक अर्थव्यवस्था से जोड़ते हैं, ताकि वे सरकारी योजनाओं का लाभ ले सकें।
स्रोत: [PIB backgrounder 'Handicrafts at the Heart of India's Rural Economy', 9 Dec 2025](https://pib.gov.in/Press-Release-Details.aspx?relid=2148297)
- राष्ट्रीय हथकरघा दिवस 7 अगस्त को होता है। सरकार ने 2015 में इसे 7 अगस्त 1905 को शुरू हुए स्वदेशी आंदोलन की स्मृति में घोषित किया। UPSC ने ठीक यही संबंध पूछा (2023 प्रश्न 83)।
स्रोत: [PIB, Ministry of Textiles, 6 Aug 2025 \(Release ID 2153053\); UPSC Civil Services \(Preliminary\) GS Paper I and final answer keys](https://pib.gov.in/Press-Release-Details.aspx?relid=2153053)
- राष्ट्रीय हस्तशिल्प सप्ताह हर वर्ष 8 से 14 दिसंबर तक मनाया जाता है।
स्रोत: [PIB backgrounder 'Handicrafts at the Heart of India's Rural Economy', 9 Dec 2025](https://pib.gov.in/Press-Release-Details.aspx?relid=2148297)

- पुरस्कार: हस्तशिल्प में शिल्प गुरु पुरस्कार सर्वोच्च सम्मान है, और इसके साथ राष्ट्रीय पुरस्कार भी दिए जाते हैं। हथकरघा में संत कबीर हथकरघा पुरस्कार और राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार दिए जाते हैं।
स्रोत: [PIB backgrounder 'Handicrafts at the Heart of India's Rural Economy', 9 Dec 2025](#); [PIB, Ministry of Textiles, 6 Aug 2025 \(Release ID 2153053\)](#)
- पैमाना: PIB के अनुसार हथकरघा और हस्तशिल्प कारीगरों की अनुमानित संख्या 64.66 लाख है। अगस्त 2025 तक हथकरघा बुनकरों में 71% और सभी कारीगरों में 64% महिलाएँ थीं।
स्रोत: [PIB backgrounder 'Handicrafts at the Heart of India's Rural Economy', 9 Dec 2025](#)

6. हस्तशिल्प कैसे दोहराएँ

- हर शिल्प को उसके पंजीकृत राज्य और उसके समूह (बुनाई, कढ़ाई, चित्रकला, धातु आदि) के साथ याद करें। UPSC के युग्म वाले प्रश्न यही जाँचते हैं।
- पंजीकृत नाम ध्यान से पढ़ें: कई नामों में जगह शामिल है, जैसे 'Sujini Embroidery Work of Bihar' या 'Kutch Ajrakh'।
- भारत के खाली मानचित्र पर राज्य-दर-राज्य शिल्प अंकित करें। सूची से नहीं, मानचित्र से दोहराएँ।
- GI की संख्या या पंजीकरण के वर्ष याद न करें: ये हर साल बदलते हैं, और UPSC शिल्प, स्थान और क्रानून जाँचता है।

स्रोत

- GI Registry, 'Details of GI Applications Registered as on December 31, 2025' (State_wise_Registered_GI_of_India.pdf) — https://ipindia.gov.in/frontend/pdf/gi/registered/State_wise_Registered_GI_of_India.pdf
- IP India, 'Geographical Indications: An Introduction' — <https://ipindia.gov.in/page-content/geographical-indications-an-introduction>
- The Geographical Indications of Goods (Registration and Protection) Act, 1999 (No. 48 of 1999), Gazette of India, 30 Dec 1999 — <https://ipindia.gov.in/geographical-indications-resources-act>
- GI Registry public search — application records — <https://search.ipindia.gov.in/GIRPublicSearch/>
- UPSC Civil Services (Preliminary) GS Paper I and final answer keys — <https://www.upsc.gov.in/examinations/previous-question-papers>
- PIB, Ministry of Textiles, 25 July 2025 (Release ID 2148297) — <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2148297>
- PIB, Ministry of Textiles, 6 Aug 2025 (Release ID 2153053) — <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2153053>
- PIB, Ministry of Development of North Eastern Region, 16 Aug 2024 (Release ID 2046099): Oeko-Tex certification for Eri silk — <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2046099>
- PIB backgrounder 'Handicrafts at the Heart of India's Rural Economy', 9 Dec 2025 — <https://www.pib.gov.in/PressNoteDetails.aspx?ModuleId=3&NoteId=156396>



NCERT Foundations · संस्करण 1.0 · सितंबर 2026

NCERT Foundations पेज के लिए स्कैन करें · www.minimalistias.com/resources/ncert

Minimalist IAS के नोट्स — यह NCERT का प्रकाशन नहीं है।